नरसी मेहता की गुजराती रचना वैष्णव जन तो...

વૈષ્ણવ જન તો તેને કહિયે, જે પીડ પરાયી જાણે રે
પર દુઃખે ઉપકાર કરે તોયે, મન અભિમાન ના આણે રે

वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीड़ पराई जाणे रे।
पर दुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमाण न आणे रे।

सच्चा वैष्णव वही है, जो दूसरों के दुख-दर्द (पीड़ा) को समझे। जो दूसरों को दुःख में देखकर उसकी भलाई (उपकार) करे, किन्तु अपने मन में किसी प्रकार का अहंकार न आने दे।

A Vaishnav is one who understands the pain of others and helps people out of their miseries,selflessly.

સકળ લોકમાં સહુને વંદે, નિંદા ન કરે કેની રે
વાચ કાછ મન નિશ્ચલ રાખે ધન ધન જનની તેની રે

सकल लोकमां सहुने वंदे, निंदा न करें कनी रे।
वाच काछ मन-निश्छल राखे, धन-धन जननी तेरी रे।

जो व्यक्ति सभी का सम्मान करे और किसी की भी बुराई (निन्दा) न करे। अपने वचन (वाणी), कर्म और मन को निश्छल (सदैव शुद्ध) रखता हो। ऐसे व्यक्ति की माता निश्चित ही धन्य है।

A Vaishnav respects everybody and does not speak ill of others. He maintains the purity of speech, action and mind . His mother is blessed indeed.

સમદૃષ્ટિ ને તૃષ્ણા ત્યાગી પરસ્ત્રી જેને માત રે
જિહ્વા થકી અસત્ય ન બોલે પરધન નવ ઝાલે હાથ રે
મોહ માયા વ્યાપે નહિ જેને દૃઢ વૈરાગ્ય જેના મનમાં રે
રામ નામ શુ તાળી રે લાગી સકળ તીરથ તેના તનમાં રે

समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे,
जिहवा थकी असत्य न बोले, परधन तव झाले हाथ रे।
मोह माया व्यापे नहि जेने, दृढ वैराग्य जेना मनमां रे,
राम नाम शु ताळी रे लागी, सकल तीरथ तेना तनमां रे।

जो व्यक्ति सभी को समान दृष्टि से देखता हो। जो सांसारिक मोह-माया की भूख (तृष्णा) से मुक्त हो। जो व्यक्ति पराई नारी (स्त्री) को अपनी माँ की तरह समझता हो और जिसकी जीभ (वाणी) कभी भी असत्य वचन न बोले। जो दूसरों की धन-दौलत को पाने की इच्छा न करे।

जिसे मोह-माया ग्रसित न कर सके। जिसके मन में दृढ़ वैराग्य के भाव हों। जो हर पल मन में राम नाम का जाप करता हो, उसके शरीर में सारे तीर्थ विद्यमान होते हैं।

A Vaishnav is one who sees everyone and everything equally, rejects greed and avarice. Who respects women as his mother, never utters lies and never aspires for anyone's property.

A Vaishnav is devoid of all material urges and remain dettached.He continuously chants the Ram nam and thus become embodiment of all the pilgrimages.

नरसी मेहता (नरसिंह मेहता) पन्द्रहवीं शताब्दी के गुजराती भक्ति साहित्य के श्रेष्ठ कवि हैं। उनके द्वारा रचे गए भजन बहुत मर्मस्पर्शी हैं। प्रस्तुत भजन 'वैष्णव जन तो ...' में उन्होंने वैष्णव धर्म के सारतत्त्वों का संकलन करके अपनी अंतर्दृष्टि एवं सहज मानवीयता का परिचय दिया है। भक्ति, ज्ञान और वैराग्य के पदों के साथ-साथ उनकी सुदामाचरित, गोविन्दगमन, दानलीला, चातुरियो, सुरतसंग्राम, राससहस्त्रपदी, शृंगार-माला, वसन्तना, कृष्णजन्मना-पदो आदि कृतियां काफी प्रसिद्ध हैं। नरसी की उदार वैष्णव भक्ति का प्रभाव गुजरात में आज भी घर-घर लक्षित होता है।